प्रश्नः

''यदि धर्म के बिना प्रसन्न रहा जा सकता है, तो इसके बारे में सोचते ज़्यों हैं?''

उज़रः

''यदि धर्म के बिना प्रसन्न रहा जा सकता है, तो इसके बारे में आप सोचते ज़्यों हैं?'' ऑस्ट्रेलिया में मिशन कार्य करते हुए यह प्रश्न हमारे सामने कई बार आया। लोगों के साथ बाइबल अध्ययन शुरू करने की कोशिश करने के समय हमें विरोध का नहीं बल्कि अज़्सर उदासीनता का सामना करना पड़ता था। जब लोगों को आराधना सभाओं में आने का निमन्त्रण दिया जाता, तो आम तौर पर उनका उज़र होता था, ''नहीं, शायद मैं न आ पाऊं'' या ''मैं नहीं आ सकता।'' लोग धर्म की बातों को गंभीरता से नहीं लेते हैं। ज़्या उन्हें इसमें दिलचस्पी रखनी चाहिए?

यह प्रश्न इस तथ्य से और भी जटिल हो जाता है कि धर्म को न मानने वाले लोग अज़्सर खुश रहते हैं। उदाहरण के लिए, ऑस्ट्रेलिया में एक समाचार पत्र में प्रकाशित रिपोर्ट से संकेत मिलता है कि ऑस्ट्रेलिया के सभी वयस्कों में से जिनका इन्टरव्यू लिया गया था, 55 प्रतिशत लोग ''बहुत प्रसन्न'' थे, 43 प्रतिशत ''प्रसन्न'' थे और 2 प्रतिशत लोग ''प्रसन्न नहीं'' थे। अमेरिका में किए गए इसी सर्वेक्षण से पता चलता है कि अमेरिकी लोग भी अपने आप को लगभग इसी अनुपात में प्रसन्न मानते हैं।[1]

यह प्रसन्नता प्रायः धर्म में भाग लिए बिना पाई जाती है। अधिकतर ऑस्ट्रेलियाई लोग कलीसिया (चर्च) में आराधना के लिए नहीं जाते हैं। उदाहरण के लिए अपने मित्रों के साथ होने और उनकी सहायता करने वाले आदर्श ऑस्ट्रेलियाई व्यज़्ति हर रोज़ मयखाने में जाकर, परिवार की सहायता करके, अपना घर बनाकर, कुछ धन बचाने के बाद अपने

बगीचे के लिए तथा अपनी पसन्द के खेलों के लिए समय पाने वाले को जीवन में बहुत संतुष्ट माना जाएगा। कहा जाता है कि बहुत से ऑस्ट्रेलियाई लोगों का ईश्वर तो Sun (सूर्य), surf (समुद्र का फेन) और suds (बीयर) हैं। बाइबल के परमेश्वर का उसके जीवन में किसी भी प्रकार का कोई प्रभाव नहीं होता।

धर्म के विषय में उसका ज़्या कहना है। उसके विचार में धर्म बूढ़े, बीमार और निर्धन लोगों का काम है। केवल मानसिक, शारीरिक या आर्थिक समस्याओं से पीड़ित लोग ही धार्मिक होते हैं। उन्हें ही जीवित रहने के लिए बैसाखी के रूप में धर्म की आवश्यकता पड़ती है। परन्तु उनकी समझ के मुताबिक खाते - पीते, धनवान, मध्यम या उच्चवर्ग, सामर्थी और स्वतन्त्र व्यज़्ति को इसकी आवश्यकता नहीं होती! उसे बैसाखी की आवश्यकता नहीं है। इसलिए वह धर्म के विषय में कम सोचता है।

ऐसी सोच रखने वाले लोग केवल ऑस्ट्रेलिया में ही नहीं हैं। वे आपके पड़ोस में भी रहते हैं; आपके साथ काम करते हैं; गली में आपसे मिलते हैं और बाज़ार में आपकी प्रतीक्षा करते हैं। वास्तव में अधिकांश लोगों के पास धर्म के लिए या तो समय कम है या है ही नहीं। बहुत से लोगों के विचार से, परमेश्वर मरा हुआ है, या कम से कम मरे के बराबर तो होगा ही, ज़्योंकि वह उनके जीवनों में कोई परिवर्तन नहीं लाता।

ज़्या उन लोगों का ऐसा सोचना सही है ? यदि आप जीवन में धार्मिक बने बिना प्रसन्न रह सकते हैं तो ज़्या चिंता करने का कोई कारण है ? मेरा उज़र है: हां, आपको धार्मिक होना चाहिए। पर ज़्यों ?

ज़्योंकि मनुष्य पशु नहीं है

प्राचीन मिथक में, रोम के एक वन देवता को मनुष्य के सिर और बकरे के धड़ वाला जन्तु माना जाता था। शायद लोगों को यह लगता था कि मनुष्य आधा पशु हो सकता है। लेकिन हम जानते हैं कि ऐसा सज़्भव नहीं है। है कि नहीं ? विकासवाद की शिक्षा जिसमें यह माना जाता है कि मनुष्य वानर जैसे पूर्वजों से विकसित हुआ है अर्थात मनुष्य पशुओं से थोड़ा ऊपर है, को हम सिरे से नकारते हैं।

इसके अलावा, यह मानने का अच्छा कारण है कि मनुष्य पशुओं से अलग जीव है। मनुष्य को पशुओं से विशेष रूप से यह बात अलग करती है कि उसे परमेश्वर के स्वरूप पर बनाया गया था, इसलिए उसका उद्देश्य पशुओं के जीवन से बड़ा और अलग है। ''जिनके द्वारा उसने हमें बहुमूल्य और बहुत ही बड़ी प्रतिज्ञाएं दी हैं: ताकि इन के द्वारा तुम उस सड़ाहट से छूटकर जो संसार में बुरी अभिलाषाओं से होती है, ईश्वरीय स्वभाव के सहभागी हो जाओ'' (2 पतरस 1:4)। इस जीवन में हमारा उद्देश्य अपने मानवीय स्वभाव को तृप्त करना नहीं बल्कि परमेश्वर के स्वभाव के अनुसार बनना, अर्थात परमेश्वर जैसे बनना है। यदि हम केवल पशु नहीं हैं, तो ज़्या हमें इस बात की खोज नहीं करनी चाहिए कि परमेश्वर हमसे ज़्या कराना चाहता है ? ज़्या हमें धार्मिक नहीं बनना चाहिए ?

ज़्योंकि बाइबल कोई परी-कथा नहीं है

बाइबल परी-कथाओं, मिथकों, या दंत कथाओं का संग्रह नहीं है। बहुत से लोगों को लगता है कि यह ऐसी ही किताब है, उन्हें बाइबल मनुष्य के प्रयास का परिणाम लगती है जिसमें थोड़ी सच्चाई, थोड़ा असत्य, थोड़ा तथ्य, थोड़ा इतिहास और थोड़ा मिथिहास हो।

इस विचारधारा में दो गलतियां हैं। एक तो यह कि बाइबल इसे नहीं मानती है। 2 तीमुथियुस 3:16, 17 पर विचार करें: ''हर एक पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है। ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए।'' बाइबल को स्वीकार करने वाले किसी भी व्यक्ति का सामना इस आयत से जरूर होगा। यह आयत सिखाती है कि बाइबल परी कथाओं की किताब नहीं है। दूसरा, यदि बाइबल सच्चाई और झूठ का मिश्रण है, तो निर्विवाद सच्चाई के रूप में बाइबल के *किसी* भी भाग पर भरोसा नहीं किया जा सकता। फिर तो वे सच्चाइयां जिन्हें माना जाता है, उदाहरण के लिए, मसीह का प्रभु होना, भी असत्य ही होंगी।

ज़्योंकि बाइबल कोई परी कथा नहीं है, इसलिए इसे पढ़कर समझें और इसकी बात मानें। धार्मिकता से इसे पढ़ें।

ज़्योंकि धर्म केवल एक ''मेटशिप'' नहीं है

''मेटशिप'' एक ऑस्ट्रेलियाई अभिव्यक्ति है। ऑस्ट्रेलिया में ''मेट'' अर्थात मित्रों को बहुत महत्व दिया जाता है, कई बार तो पत्नी या परिवार से भी अधिक। ''मेटशिप'' का अर्थ अपने मित्रों या साथी देशवासियों का ध्यान रखना है विशेषकर उनके किसी मुश्किल में होने पर उनकी आवश्यकताओं को पूरा करने में सहायता करके।

ऑस्ट्रेलियाई लोगों को हम दूसरों की सहायता के लिए धन देने में बहुत दयालु मानते हैं, उदाहरण के लिए जंगल में लगी आग से राख हुए घरों को फिर से बसाने के लिए लोगों की सहायता करना। यह अच्छी बात है। परन्तु समस्या यह थी कि अधिकांश लोगों को यह लगा कि धर्म यहां तक ही सीमित है। उन्हें लगा कि ''जब तक मैं दूसरों की भलाई के लिए काम करता हूं, वह निश्चय ही परमेश्वर की इच्छा के अनुसार है।'' उनकी फिलॉस्फी थी, ''यदि मैं दूसरे लोगों से सही व्यवहार करूं, तो वे अच्छे मित्र बन जाएंगे।''

आपको पता है कि लोगों को यह भी अच्छा लगता है। या नहीं? उन्हें लगता है कि यदि वे दान देकर लोगों की सहायता करते हैं, तो उन्हें कलीसिया में जाकर आराधना करने या परमेश्वर की किसी आज्ञा को मानने की आवश्यकता नहीं है।

बेशक परमेश्वर उज़्मीद करता है कि हम दूसरे लोगों का भला करें। (देखिए मज़ी 7:12.) परन्तु, वह केवल *इतनी* ही उज़्मीद नहीं करता है। उसने दूसरी आज्ञा ''अपने पड़ोसी से प्रेम'' करने की तो दी, परन्तु उसकी पहली आज्ञा अपने परमेश्वर से *तन मन से*

प्रेम करने की ही है (मरकुस 12:30, 31)। मसीही धर्म केवल दूसरों की सहायता करने तक ही सीमित नहीं है। यह अनुग्रह से होने वाला उद्धार भी है। हमारे धर्म की मुख्य बात का वर्णन पौलुस ने इस प्रकार किया है: ''उस ने हमारा उद्धार किया: और यह धर्म के कामों के कारण नहीं, जो हम ने आप किए, पर अपनी दया के अनुसार, नए जन्म से स्नान, और पवित्र आत्मा के हमें नया बनाने के द्वारा हुआ'' (तीतुस 3:5)। मसीहियत उद्धार का संदेश देती है और उद्धार केवल भलाई करके नहीं पाया जा सकता। उद्धार के लिए अनुग्रह का होना आवश्यक है। इसका अर्थ यह हुआ कि आपको अपनी धार्मिक स्थिति अर्थात यह देखना आरम्भ कर देना चाहिए कि आप कहां पर हैं।

क्योंकि यीशु केवल ''नम्र और दीन'' ही नहीं है

कुछ लोग मसीह में विश्वास तो करते हैं, परन्तु केवल ''नम्र और दीन'' रूप को ही देखते हैं। उनके विचार से वह इतना दयालु, कृपालु और प्रेम करने वाला है कि वह किसी को दण्ड नहीं दे सकता। इसलिए उन्हें उसकी इच्छा को जानना आवश्यक नहीं लगता। उन्हें लगता है कि यदि वे उसकी इच्छा पूरी नहीं करते तो वह उन्हें दण्ड नहीं देगा।

नि:संदेह यीशु सचमुच में ''दीन और नम्र'' है, परन्तु उसके स्वभाव का दूसरा पहलू भी है जिसे किसी ने यीशु का ''क्रोध वाला उज़री भाग'' कहा है। उदाहरण के लिए, यूहन्ना 8:24 पर विचार करें: ''इसलिए मैंने तुमसे कहा कि तुम अपने पापों में मरोगे; क्योंकि यदि तुम विश्वास न करोगे कि मैं वही हूं, तो अपने पापों में मरोगे।'' यीशु इस बात को मानता था कि पाप का अस्तित्व है। इसके अलावा यीशु दण्ड में, अर्थात पाप के फल के रूप में मृत्यु में यकीन रखता था। उसने कहा कि कुछ लोग दण्ड पाएंगे। यीशु शर्तें ठहराने में भी यकीन रखता था कि उन्हें पूरा न करने पर दण्ड मिलेगा। यीशु ने यह भी कहा कि खोए होने से बचने के लिए परमेश्वर की आज्ञा मानना ज़रूरी है (देखिए मत्ती 7:21)। फिर, यदि यीशु दण्ड दे सकता है और देगा भी, तो मुझे उसकी इच्छा को पूरा करना चाहिए, क्योंकि धार्मिक होने से मेरा यही तात्पर्य है।

क्योंकि विश्वास कोई जादू की पुड़िया नहीं है

एक प्रसिद्ध शिक्षा यह है कि यदि आप यीशु में विश्वास करें, तो सब कुछ ठीक हो जाएगा। आप यीशु पर विश्वास करके ही उद्धार पा सकते हैं। यही मान लें कि यीशु प्रभु है, परमेश्वर है, तो आपका उद्धार हो जाएगा, चाहे आप उसकी इच्छा पूरी करें या नहीं।

केवल विश्वास करने से ही किसी का उद्धार *नहीं* होगा (याकूब 2:24)। विश्वास होना आवश्यक है (यूहन्ना 3:16)। परन्तु उद्धार पाने के लिए जिस विश्वास की आवश्यकता है वह प्रेम के द्वारा कार्य करता है (गलतियों 5:6)। आपका उद्धार उसी क्षण नहीं हो जाता जब आप यीशु को परमेश्वर का पुत्र मानकर विश्वास करने लगते हैं। इस तथ्य पर विश्वास

करके आपको अपने विश्वास को उसकी इच्छा पूरा करने के लिए लगाना पड़ेगा। आपका उद्धार भी होता है जब आप अपने विश्वास से, परमेश्वर की इच्छा को पूरा करते हैं, उससे पहले नहीं। प्रेरितों 2 अध्याय में, कुछ लोगों ने मसीह के सम्बन्ध में पतरस के संदेश पर विश्वास किया था। इसलिए उन्होंने पूछा था, ''हम ज़्या करें ?'' पतरस ने इन यहूदियों को यह *नहीं* कहा था कि जो करना आवश्यक था वह तो उन्होंने कर लिया है इसलिए उनका उद्धार हो गया है। उसने *विश्वास करने वाले* इन लोगों से कहा था कि ''मन फिराओ, और तुम में से हर एक अपने - अपने पापों की क्षमा के लिए यीशु मसीह के नाम से बपतिस्मा ले; तो तुम पवित्र आत्मा का दान पाओगे'' (प्रेरितों 2:38)। उनके लिए केवल विश्वास करना ही काफी नहीं था बल्कि मन फिराव तथा बपतिस्मा लेना भी जरूरी थे। ज़्योंकि हमें उसकी आज्ञा मानना भी आवश्यक है इसलिए धार्मिक होने का एक अच्छा कारण है।

ज़्योंकि परमेश्वर क्रिसमस-फ़ादर या सांता-ज़्लाज़ नहीं है

कुछ लोग इस बहकावे में आ जाते हैं कि परमेश्वर सफेद दाड़ी-मूंछों वाले एक काल्पनिक भद्र-पुरुष सांता ज़्लाज़ की तरह ही होगा जिसके बारे में कहा जाता है कि वह क्रिसमस पर लोगों के लिए उपहार छोड़ जाता था। हम सब जानते हैं कि कहते तो हैं कि सांता ज़्लाज़ केवल अच्छे बच्चों के लिए ही उपहार लाता था, परन्तु वह हमारे किसी लड़के या लड़की को उपहार दिए बिना नहीं छोड़ता, चाहे वे साल भर कितने भी शरारती रहे हों। सांता किसी भी बच्चे को अच्छा बनने के लिए नहीं कहता। सांता बच्चे की शरारतों को नज़रअंदाज करके क्रिसमस के समय उसे खिलौने दे ही देता है।

ज़्या आपको लगता है कि परमेश्वर भी ऐसा ही है ? हम जानते हैं कि उसके बारे में कहा जाता है कि वह केवल उन्हें ही प्रतिफल देगा जिनका जीवन अच्छा है। परन्तु किसी न किसी तरह हमें लगता है कि वह सब के लिए उपहार देने का रास्ता निकाल ही लेगा, वह चाहे जीवन में कितना भी अच्छा या बुरा ज़्यों न रहा हो। एक कहावत है: ''युद्ध के मोर्चों में कोई नास्तिक नहीं होता।'' प्रचारक तथा रिश्तेदारों की बात मानकर, हम कह सकते हैं: ''कफ़न में पड़ा कोई दुष्ट नहीं होता।'' जीवित रहते समय कोई चाहे कितना भी बुरा ज़्यों न हो, हमें यही लगता है कि परमेश्वर मृत्यु के बाद उसे क्षमा करके स्वर्ग में कोई न कोई स्थान दे ही देगा। हम परमेश्वर को एक भद्र पुरुष अर्थात ऐसे दादा के रूप में देखते हैं जो यही कहता है, ''अच्छा, ज़िद करते हो, तो जाओ अपनी मर्ज़ी करो; देख लेंगे। बाद में मैं सम्भाल लूंगा''

परमेश्वर ऐसा नहीं है! परमेश्वर भला और प्रेम करने वाला है। बल्कि वह इससे भी अधिक है ज़्योंकि परमेश्वर धर्मी है! और उसके न्याय की यह मांग है कि कभी-कभी वह अनुग्रहकारी तथा क्षमा करने वाला होने के साथ-साथ कठोर और दण्ड देने वाला भी हो। बाइबल ''परमेश्वर की कृपा *और* कड़ाई'' की बात करती है (रोमियों 11:22)। यह कहती है, ''जीवते परमेश्वर के हाथों में पड़ना भयानक बात है'' (इब्रानियों 10:31)। ऐसा नहीं है कि आप अपनी इच्छानुसार कुछ भी करें और उसका फल न भोगें। ज़्योंकि परमेश्वर तो वैसा

ही है जैसा उसे होना चाहिए, और वह पश्चाज़ाप न करने वाले क्षमारहित पापियों को दण्ड अवश्य देगा। इसलिए, हमें चाहिए कि हम धार्मिक बनें!

ज़्योंकि मृत्यु का अर्थ अंत नहीं है

बहुत से लोगों को लगता है कि मनुष्य बूढ़े कुज़े की तरह है जिसके मर जाने के बाद सब कुछ खत्म हो जाता है। यदि यह सत्य होता तो धार्मिक होने की कोई आवश्यकता नहीं है। हम जीवन का आनन्द जैसे चाहें ले सकते हैं ज़्योंकि मरने के बाद तो सब कुछ खत्म हो जाएगा और किसी को कोई हिसाब नहीं देना पड़ेगा। उनका मानना है कि परमेश्वर की इच्छा के बारे में चिंतित होने का कोई कारण नहीं है।

परन्तु मृत्यु से हमारा अस्तित्व मिट नहीं जाता। कब्र या शारीरिक मृत्यु के बाद भी हम जीवित रहते हैं। बाइबल कहती है, ''मनुष्यों के लिए एक बार मरना और उसके बाद न्याय का होना नियुज़्त है'' (इब्रानियों 9:27)। मृत्यु के बाद, न्याय होगा, जिसमें हम सभी को शरीर में रहते हुए किए गए अपने सब कामों का हिसाब-किताब देने के लिए परमेश्वर के सामने पेश होना पड़ेगा। जहां हमारा न्याय *होगा*। अनन्तकाल का समय हम या तो स्वर्ग में या फिर नरक में *बिताएंगे*। ज़्या परमेश्वर की इच्छा अर्थात हमारे लिए धार्मिक बनना शुरू करने के लिए इतना तर्क ही काफी नहीं है?

ज़्योंकि आप सुपरमैन की तरह नहीं हैं

ऐसे व्यज़्ति पर विचार करें जो जानता है कि वह खोया हुआ है और उसे मालूम है कि उद्धार पाने के लिए ज़्या करना है। परन्तु वह भविष्य में किसी दिन यह कार्य करने की योजना बनाता है। वह कहता है, ''अगले सप्ताह, या अगले माह या अगले साल करूंगा। फिर मैं मसीह के पास आकर परमेश्वर की सेवा करने लगूंगा। फिर मैं धार्मिक बन जाऊंगा।'' लगता है कि वह अपने आप को सुपरमैन अर्थात अतिमानव समझता है जिसका अपने जीवन तथा परिस्थितियों पर उसका पूरा नियन्त्रण है। उसे लगता है कि समय, जीवन, बीमारी, तथा मृत्यु उसके वश में हैं। उसे किसी बात की चिंता नहीं है। गंभीर बीमारी की? नहीं, वह बीमार नहीं होगा। किसी दुर्घटना की? नहीं। वह इस बात की गारन्टी दे सकता है कि उसकी कभी दुर्घटना नहीं होगी। किसी त्रासदी की? नहीं, ऐसी कोई बात नहीं होगी; एक झटके से वह त्रासदी को दूर कर देता है। समय से पहले या असमय मृत्यु की? बेशक उसे इसकी कोई परवाह नहीं है। आखिर उसे इस बात का पूरा ज्ञान है कि वह अपनी पसन्द के सभी अच्छे काम करने के लिए जैसे कि मसीही बनना, लज़्बी आयु जीएगा।

मेरे मित्र, यदि आप इस तरह से सोच रहे हैं, तो आप अपने आप को मूर्ख बना रहे हैं। याकूब कहता है, ''और यह नहीं जानते कि कल ज़्या होगा: सुन तो लो, तुज़्हारा जीवन है ही ज़्या? तुम तो मानो भाप समान हो, जो थोड़ी देर दिखाई देती है, फिर लोप हो जाती है'' (याकूब 4:14)। मनुष्य सुपरमैन या अतिमानव नहीं है। कोई भी इस बात की गारन्टी नहीं दे सकता कि बीमार, दुर्घटना, त्रासदी या असमय मृत्यु उसके और उसकी

इच्छाओं को पूरा करने में रुकावट नहीं बनेंगे। आप अतिमानव या सुपरमैन *नहीं* हैं। मसीह के लौटने की प्रतीक्षा करने का समय आपके पास केवल आज ही है। मसीह को उसके आने से पहले ही ग्रहण करें और आज ही धार्मिक बन जाएं।

ज़्योंकि मनुष्य को धार्मिक बनने से रोका नहीं जा सकता

मनुष्य धार्मिक हुए बिना नहीं रह सकता। इसका अर्थ यह है कि एक अर्थ में, आपसे धार्मिक होने का आग्रह करना व्यर्थ है, ज़्योंकि आप तो पहले से ही धार्मिक हैं।

इसे रोमियों 1 अध्याय द्वारा समझाया जा सकता है जहां पौलुस कुछ लोगों की बात करता है जो सबसे बुरे पाप करने में लगे हुए थे। उन्होंने परमेश्वर को भुला दिया था, जिस कारण परमेश्वर ने भी उन्हें छोड़ दिया था। वे हत्या करने वाले, बुराई करने वाले, डींगें मारने वाले, समलैंगिक व परमेश्वर से घृणा करने वाले बन गए थे। इसलिए ज़्या हम यह निष्कर्ष निकालें कि वे धार्मिक नहीं थे? रोमियों 1:25 में पौलुस की बात पर ध्यान दें: ''ज़्योंकि उन्होंने परमेश्वर की सच्चाई को बदलकर झूठ बना डाला, और सृष्टि की उपासना और सेवा की, न कि उस सृजनहार की जो सदा धन्य है। आमीन।'' पाप के दोषी होने के बावजूद, वे किसी न किसी की उपासना या पूजा कर रहे थे! यद्यपि वे गलत वस्तु की अर्थात सृष्टिकर्ज़ा के बजाय सृष्टि की ही उपासना कर रहे थे। मेरा मानना है कि हर मनुष्य किसी न किसी की उपासना अवश्य करता है! कहने का भाव यह है कि वह सृष्टिकर्ज़ा की नहीं तो सृष्टि की उपासना तो अवश्य करता है।

वर्तमान में लोग अलग-अलग वस्तुओं की उपासना करते हैं। कुछ लोग *धन* की पूजा करते हैं। उन्हें लगता है कि धन उन्हें प्रसन्नता दे सकता है, इसलिए वे सर्वशज़्तिमान रुपये की सेवा में ही अपना जीवन गुज़ार देते हैं। दूसरे लोग *भोग-विलास* की पूजा करते हैं ज़्योंकि उनकी दिलचस्पी केवल आनन्द करने में है। कुछ लोग *विज्ञान* की पूजा करते हैं ज़्योंकि उन्हें जीवन के हर प्रश्न का उज़र विज्ञान में ही दिखाई देता है। इतना तकनीकी विकास यदि हम ज्ञान-विज्ञान से पा सकते, तो हम पृथ्वी पर स्वर्ग को भी उतार सकते थे। कुछ लोग तो *पाप* की पूजा करते हैं। पाप ने उन्हें बंदी बना लिया है और उन पर उसका नियन्त्रण है, इसलिए उन्हें कुछ और अच्छा नहीं लगता। परन्तु एक बात तो पज़्की है कि वे किसी न किसी की उपासना या पूजा अवश्य करते हैं।

फिर आपकी पसन्द की बात यह नहीं है कि आप आराधना करेंगे या नहीं, बल्कि यह है कि आप *किसकी* आराधना करेंगे। यीशु ने इसे यों कहा था: ''कोई मनुष्य दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता, ज़्योंकि वह एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा; वह एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते'' (मज़ी 6:24)। परमेश्वर या धन, सृष्टिकर्ज़ा या सृष्टि में से एक का चुनाव करना आपका काम है। आप इनमें से किसकी उपासना करेंगे?

सारांश

यदि आप को अपनी पसन्द चुनने के लिए कहा जाता है तो आपको परमेश्वर की सेवा या उपासना करना ज़्यों चुनना चाहिए ? ज़्या आप ऐसा किए बिना प्रसन्न रह सकते हैं ? हां, मैं बे झिझक यह मानता हूं कि आप परमेश्वर की सेवा किए बिना कुछ हद तक प्रसन्न रह सकते हैं। परन्तु मैं यह भी मानता हूं कि पूर्ण अर्थात पूरी तरह आनन्दित, भरपूरी का जीवन हमारे प्रभु की सेवा करने से ही मिलता है। यीशु ने इसे यों कहा था:

> मैं तुम से सच कहता हूं, कि ऐसा कोई नहीं, जिस ने मेरे और सुसमाचार के लिए घर या भाइयों या बहिनों या माता या पिता या लड़के-बालों या खेतों को छोड़ दिया हो। और अब इस समय सौ गुणा न पाए, घरों और भाइयों और बहिनों और माताओं और लड़के - बालों और खेतों को पर उपद्रव के साथ और परलोक में अनन्त जीवन (मरकुस 10:29, 30)।

मसीहियत ''आकाश में मिली एक-एक वस्तु का मिश्रण'' ही नहीं है। यह हमें इस जीवन की अद्‌भुत आशिषें देती है।

परन्तु मसीहियत ऐसी कुछ चीज़ ''... परलोक में अनन्त जीवन'' देती है जो कोई दूसरा नहीं दे सकता! *यदि* आप मसीह के बिना भी उतना ही प्रसन्न रह सकते हैं जितना उसके साथ रहकर, तो भी आपको धन के बजाय परमेश्वर को चुनने की कीमत चुकानी पड़ेगी, ज़्योंकि इस संसार में *मसीह के बिना* आपको स्वर्ग में ले जाने वाला कोई नहीं है।

और आपको आज ही उसे चुन लेना होगा। यहोशू ने इस्राएल के लोगों को चुनौती दी थी: ''आज चुन लो कि तुम किस की सेवा करोगे'' (यहोशू 24:15)। सो बहुत से लोग अपने फैसले को टालना चाहते हैं। लगता है जैसे वे कह रहे हों, ''हे प्रभु, मैं तुझे चुन लूंगा, पर अभी नहीं, थोड़ी देर बाद।'' आप कैसे जानते हैं कि बाद में आपको समय मिल जाएगा ? आपके पास केवल आज ही का समय है। आज ही वह दिन है जिसमें आपको मसीह को चुन लेना चाहिए। उसे चुनना आपकी इच्छा पर निर्भर है। वास्तव में आप उसे अपनी इच्छा से ही चुन सकते हैं। यदि आज आप मसीह को नहीं चुनते हैं, तो इसका अर्थ यह हुआ कि आपने संसार को चुन लिया है। आप तटस्थ नहीं रह सकते। ''स्वयं चुनाव करें'' और मसीह को चुन लें!

पाद टिप्पणी

[1] *द सन - हैरल्ड,* सिडनी, N.S.W., जनवरी 1971.